National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2023; 1(48): 167-170
© 2023 NJHSR
www.sanskritarticle.com

डॉ. लालसिंहपठानिया
प्राचार्यः (प्र.),
सनातनधर्म-आदर्शसंस्कृतमहाविद्यालयः,
डोहगी, ऊना, हिमाचलप्रदेशः

Correspondence:
डॉ. लालसिंहपठानिया
प्राचार्यः (प्र.),
सनातनधर्म-आदर्शसंस्कृतमहाविद्यालयः,
डोहगी, ऊना, हिमाचलप्रदेशः

नीतिशास्त्रों की उपादेयता

डॉ. लालसिंहपठानिया

अनेकसंशयोच्छेदि परोक्षार्थस्य दर्शकम् ।
सर्वस्य लोचनं शास्त्रं यस्य नास्त्यन्ध एव सः।[1]

'शास्त्रं शासनात्' व्युत्पत्ति के परिप्रेक्ष्य में 'शास्त्र' शब्द से अभिप्राय सम्बन्धित विषय के नियमोपनियम या मर्यादा आदि से है । संस्कृत में विभिन्न विषयों से सम्बन्धित अनेक शास्त्र हैं । यथा साहित्यशास्त्र, ज्योतिषशास्त्र, धर्मशास्त्र, नीतिशास्त्र, अर्थशास्त्र, वास्तुशास्त्र, कामशास्त्र, काव्यशास्त्र, दर्शनशास्त्र एवं नाट्यशास्त्र आदि ।

नीतिशास्त्र (The Science of Ethics or of Politics) मुख्यता धर्मशास्त्र (Theology) और राजनीति या दण्डनीति (Polity & administration) विषयों से सम्बन्धित है । अर्थशास्त्र के अन्तर्गत नीतिशास्त्र ग्रन्थ भी है । अर्थशास्त्र के सम्बन्ध में शुक्रनीति में कहा गया है -

श्रुतिस्मृत्यविरोधेन राजवृत्तादिशासनम्।
सुयुक्त्यार्थार्जनं यत्र ह्यर्थशास्त्रं तदुच्यते॥[2]

इस सम्बन्ध में चाणक्य का कथन है - **मनुष्याणां वृत्तिरर्थः, मनुष्यवतीभूमिरित्यर्थः, तस्याः पृथिव्याः लाभपालनोपायः शास्त्रमर्थशास्त्रमिति**[3] अर्थात् मनुष्यों की आजीविका व भूमिप्राप्ति तथा रक्षा से सम्बन्धित विषयों से युक्तशास्त्र अर्थशास्त्र है । स्मृतियों की विषयवस्तु भी आंशिकरूप से अर्थशास्त्रीय विषयों से जुड़ जाती है । इस सन्दर्भ में शुक्रनीति का कथन है -

वर्णादिधर्मस्मरणं यत्र वेदाविरोधकम्।
कीर्तनं चार्थशास्त्राणां स्मृतिः सा च परिकीर्तिता।।[4]

ऋग्वेद में राजा सुदामा के शासनप्रबन्ध का उल्लेख नीतिशास्त्र सन्दर्भों को संकेतित करता है, पुनरपि शुक्राचार्य व बृहस्पति नीतिशास्त्र के प्रवर्त्तक माने जाते हैं।

महाकवि अश्वघोष का कहना है, कि जिस राजनीतिशास्त्र का प्रणयन वंशप्रवर्त्तक ऋषि भृगु व अंगिरा नहीं कर सके, उसका सृजन उनके पुत्र शुक्र व बृहस्पति ने किया । इस सन्दर्भ में विवेचन भी मिलता है -

यद्राजशास्त्रं भृगुरङ्गिरा वा न चक्रतुर्वंशकरावृषी तौ।
तयोः सुतौ सौम्य ससर्जतुस्तत्कालेन शुक्रश्च बृहस्पतिश्च॥[5]

अर्थशास्त्र का प्रारम्भ चाणक्य 'नमः शुक्रबृहस्पतिभ्याम्' से करते हैं । पञ्चतन्त्रकार विष्णुशर्मा ग्रन्थ के मंगलाचरण में इन नीतिशास्त्रकारों को नमन करते हैं -

मनवे वाचस्पतये शुक्राय पराशराय ससुताय।
चाणक्याय च विदुषे नमोऽस्तु नयशास्त्रकर्तृभ्यः।।[6]

वात्स्यायन ने कामसूत्र में बृहस्पति के अर्थशास्त्र को संकेतित किया है - **बृहस्पतिरर्थाधिकारकम्।**

कौटिल्य ने अर्थशास्त्र में शुक्र, बृहस्पति, आम्भ, कौणपदन्त, पराशर, बाहुदन्तीपुत्र व भारद्वाज के नीतिशास्त्रसम्बन्धी मतों का अनेक स्थलों पर उल्लेख किया है । महाकवि दण्डी ने दशकुमारचरित के विश्रुतचरित में शुक्र, बृहस्पति, मनु, विशालाक्ष, बाहुदन्तिपुत्र, पराशर आदि नीतिशास्त्रों का उल्लेख किया है ।

नीतिग्रन्थों की दीर्घकालीन परम्परा में शुक्रनीति, अर्थशास्त्र (कौटिल्य) चाणक्यनीति, नीतिशतक (भर्तृहरि) पञ्चतन्त्र (विष्णुशर्मा) हितोपदेश (नारायण) कामन्दनीयनीतिसार आदि विशेष स्थान रखते हैं । शुक्रनीति और अर्थशास्त्र का प्राधान्येन सम्बन्ध राजप्रबन्ध से है, जबकि अन्य नीतिशास्त्रों में सत्संस्कार निर्माण व नैतिकमूल्यों से सम्बन्धित सामग्री पर्याप्तमात्रा में है। शुक्रनीति का कितना अंश शुक्राचार्य का है, यह अलग से शोध का विषय है ।

शुक्रनीति का दूसरा अध्याय सेवारत कर्मचारियों के सेवा नियमों (Service Rules) से है । इस अध्याय में बहुत ही उपयुक्त व रोचक सेवानियम दिये गये हैं । जैसे कि एक साल में 15 दिन के वेतन के बराबर राशि अधिलाभांश (Bonus) के रूप में देना । कहा भी है - **'सेवां विना नृपः पक्षं दघात् भृत्याय वत्सरे।'**[7]

कर्मचारी का अनुभव बढ़ जाने पर वेतनवृद्धि (Increment) वेतन और भत्तों की यथासमय अदायगी, 40 वर्ष का सेवाकाल पूरा होने पर या कर्मचारी की सेवाकाल की अवधि में मृत्यु हो जाने पर आधा वेतन पेंशन के रूप में देना, पत्नी और अवयस्क बच्चों के लिए पेंशन का कुछ अंश, भविष्यनिधि, मैडिकल आधार पर सवैतनिक छुट्टी, वेतन के षष्ठांश या चतुर्थांश की भविष्यनिधि (Provident Fund) के लिए कटौती आदि ।

रामायण, महाभारत, महाकाव्यों व नाटकों में यत्र-तत्र नीतिशास्त्र सन्दर्भ हैं। ये सन्दर्भ हजारों वर्ष पुराने भारतीयचिन्तन को द्योतित करते है । 'ऋषिर्दर्शनात्' व्युत्पुत्ति के अनुसार ऋषि द्रष्टा (Visionary) है। उसकी दूरदृष्टि युगों-युगों तक प्रासंगिक है, उसका सम्बन्ध चाहे नैतिकता से हो या राजनैतिक विषयों से हो ।

महर्षिवाल्मीकि ने रामायण में सुशासन के लिए कई निर्देश दिये है, जिनका महत्त्व आज भी उतना ही है जितना कि उस युग में था । वन में मिलने गए भरत से राम शासनव्यवस्था के सम्बन्ध में प्रश्न करते है, जिनमें से उदाहरणार्थ कुछ प्रश्न इस प्रकार है :-

कृषि (Agriculture) और पशुपालन (Animal Husbandary) किसी राष्ट्र की समृद्धि के मूलतत्त्वों में से है । इस व्यवसाय से सम्बन्ध लोगों की और शासनतन्त्र को विशेषध्यान देना चाहिए तथा इनकी हर सुविधा रहना चाहिए । इस वर्ग के सम्बन्ध में राम पूछते हैं -

कच्चित् ते दयिताः कृषिगोरक्षजीविनः।
वार्तायां संश्रितस्तात लोकोऽयं सुखमेधते।।[8]

कर्मचारी वर्ग को नियमितरूप से वेतन व समय-समय पर भत्ते (DA) मिलते रहने चाहिए, अन्यथा इस वर्ग में असन्तोष फैल जाता है । राम इस सम्बन्ध में पूछते हैं -

क्वचिद् बलस्य भक्तं च वेतनं च यथोचितम्।
सम्प्राप्तकालं दातव्यम् ददासि न विलम्बसे।।
कालातिक्रमणं ह्येव भक्तवेतनयोर्भृताः ।
भर्तुरतिकुप्यन्ति सोऽनर्थः सुमहान् कृतः।।[9]

रामायण राजकोष की आय-व्यय के सन्तुलन पर बल देता है । रामायण के अनुसार राजकोष की आय को उसी अनुपात से जनहित के कामों में लगा देना चाहिए, तथा इसके साथ-साथ यह भी ध्यान रखना चाहिए कि जनकल्याण के लिए प्रदत्तराशि (Grants) अपात्र व्यक्तियों के हाथ में न चढ़े । कहा भी है -

आयस्ते विपुलः कच्चित् कच्चिदल्पतरो व्ययः।
अपात्रेषु न ते कच्चित् कोषो गच्छति राघवः।।[10]

महाकवि कालिदास का मानना है, कि राजा प्रजा से जो कर (Tax) लेता है उसे प्रभूतमात्रा में प्रजा के कल्याण व समृद्धि के लिए लगा देना चाहिए । जैसे कि सूर्य देवता भूमण्डल से लिए गये जल को हजार गुणा करके बरसाता है । इस सन्दर्भ में कहा भी है -

प्रजानामेव भूतयर्थं स ताभ्यो बलिमग्रहीत्।
सहस्रगुणमुत्स्रष्टुमादत्ते हि रसं रविः ।।[11]

प्राचीनकालीन राजव्यवस्था में सभा (Lower House) और समिति (Upper House) नामक दो सदनों के अस्तित्व के कई प्रसंग है। सभा के विषय् में नीतिशास्त्र का कहना है कि सभा में वृद्धि (Mature) लोग होने चाहिएं, वृद्ध धर्मपूर्वक बाते करें धर्म सत्य पर आधारित हो तथा सत्य में कोई छल लपट नहीं होना चाहिए -

न सा सभा यत्र न सन्ति वृद्धाः वृद्धा न ते ये न वदन्ति धर्मम्।
धर्मो न स यत्र न सत्यमस्ति सत्यं न तद्यच्छलेनानुविद्धम्।।

महर्षिवाल्मीकि के अनुसार सभा के सदस्य सभा में न तो जोर-जोर से चिल्लाएँ, न वहाँ झूठ बोलें तथा न ही सभा में जाकर असम्बद्ध बोलें । रावण के द्वारा बुलाई गई संसद् में सभासदों के विषय में कहा गया है -

न त्रक्रुशुर्नानृतमाह कश्चित् सभासदो नापि जजल्पुरुच्चैः।।
संसिद्धार्थाः सर्व एवोग्रवीर्या भर्तुः सर्वे ददृशश्चाननं ते।।[12]

भारत कृषिप्रधान देश है । आज किसान संत्रस्त है। उसकी समस्याओं का समुचित समाधान नहीं हो पा रहा है । महाभारत का कथन है, कि 'समिति' का सदस्य उसे बनाया जाना चाहिए, जो स्वयं कृषिकार्य से जुड़ा हुआ हो -

न स समितिं गच्छेद् यश्च नो निर्वपेत् कृषिम्।[13]

इसका अभिप्राय स्पष्ट है, कि नीतिनिर्धारक किसान की समस्याओं को तभी ठीक ढंग से समझ पाएगा यदि वह स्वयं कृषि से समबन्धित होगा ।

स्मृतियों में सामाजिकव्यवस्था से जुड़े हुए कई ऐसे पक्ष हैं, जिनकी प्रासंगिकता आज कहीं अधिक है । वर्तमानयुग में किसानों से भूमि अधिग्रहण (Land Acquisition) की समस्या आई है । हमें

सर्वप्रथम यह निर्धारण करना पड़ेगा कि भूमि किस उद्देश्य के लिए ली जाए।

स्मृति का कहना है, कि किसानों को चाहिए कि वे पुल, बान्ध, नहर व कुएँ के लिए जमीन अपनी इच्छा से दे देवें, क्योंकि इससे जमीन थोड़ी जाती है और लाभ ज्यादा होता है-

न तुषेध्योऽल्पबाधस्तु सेतुः कल्याणकारकः।
परभूमिं हरनकूपः स्वल्पक्षेत्रो बहूदकः।।[14]

स्मृति का आगे कहना है, कि यदि किसान की इच्छा के विरुद्ध इन कामों के किए भूमि का अधिग्रहण करना पड़े तो उससे होने वाली आय में किसान का हिस्सा निर्धारित किया जाना चाहिए।

स्वामिने योऽनिवेद्यैव क्षेत्रे सेतुं प्रवर्तयेत।
उत्पन्ने स्वामिनो भोगस्तदभावे महीपतेः।।[15]

भारत गांवों का देश है तथा ग्राम्य जीवन में 'शामलातभूमि' (Comman Land) व पशुओं के लिए चरगाह (गोचरभूमि) का बहुत महत्त्व है। जब से ग्रामीण के जीवन में दुःखों की वृद्धि हो गई है। याज्ञवल्क्यस्मृति का कहना है, कि ग्रामीणों की स्वेच्छा से या राजाज्ञा से शामलात भूमि रखी जानी चाहिए। जैसा कि कहा है - **ग्राम्येच्छया गोप्रचारो भूमिराजवशेन वा।** याज्ञवल्क्यस्मृति, व्यवहाराध्याय - १६६

शामलातभूमि का परिणाम के विषय में कहा गया है, कि गाँव के चारों और सौ धनुष (लगभग 600 फूट) चौड़ी पहाड़ों से दो सौ धनुष (लगभग 1200 फूट) तथा शहरों के चारों और लगभग 2400 फूट भूमि रखी जाए जिसका सभी स्वेच्छा से उपयोग कर सकें -

धनुः शतं परीहाणो ग्रामे क्षेत्रान्तरं भवेत्।
द्वे शते खर्वटस्य स्यान्नगरस्य चतुःशतम्।।[16]

दवाइयों घी-तेल, नमक, सुगन्धित द्रव्य, अनाज, गुड़ व अन्य खाद्यपदार्थों में मिलावट करने वाले को स्मृति दण्डित करने का निर्देश देती है -

भेषज-स्नेह-लवण-गन्ध-धान्य-गुड़ादिषु।
पण्येषु प्रक्षिपन्हीनं पणान्दाप्यस्तु षोडश॥[17]

नीतिग्रन्थों में चरित्रनिर्माण व समाजिकहित से सम्बन्धित पर्याप्त निर्देश है, जिनमें अहिंसा, सन्तोष, परोपकार, त्याग, सत्य, कर्त्तव्यपरायणता, मातृपितृसेवा, अतिथिसत्कार गुरुजनसम्मान, सत्संगति आदि उल्लेखनीय है।

वर्तमान समय में नैतिक मूल्यों के ह्रास में उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है, इन परिस्थितियों में नीतिशास्त्र उपदेशों की प्रासंगिकता और भी बढ़ जाती है तथा उनका अनुसरण करने की विशेष आवश्यकता है। प्रमुख नीतिशास्त्र पञ्चतन्त्र की रचना का उद्देश्य रोचक कथाओं के माध्यम से बच्चों के संस्कार बनाना है। इस ग्रन्थ में कथाओं के अन्तर्गत श्लोक बहुत उपयोगी है। देखा जा रहा है, कि महिलाओं के प्रति अपराध तथा दूसरे की सम्पत्ति को किसी भी तरह हथियाने की प्रवृति बढ़ रही है, इसके समाधान में पञ्चतन्त्र का कथन है -

मातृवत्परदारेषु परद्रव्येषु लोष्ठवत्।
आत्मवत् सर्वभूतेषु यः पश्यति स पण्डितः ।।[18]

अर्थात् जो दूसरे की पत्नी को माँ के समान, दूसरे के धन को मिट्टी के समान तथा अन्य प्राणियों को अपने समान देखता है, वही बुद्धिमान् है। पञ्चतन्त्र अपने-पराए के भेद से ऊपर उठ कर विश्वबन्धुत्व (Universal Brotherhood) की बात करता है -

अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्।
उदारचरितां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।।[19]

रातों-रात-जैसे-कैसे करोड़पति बनने की प्रवृति मानव को नैतिकता से बहुत दूर ले गई है जबकि इस प्रवृत्ति का अन्त बहुत बुरा होता है। अपरीक्षितकारक में दो कथाएँ इस लोलुपप्रवृति के प्रति सचेत करती है। मन्थरक बुनकर की कथा में मन्थरक अधिक कमाई के लिए देवता से दो अतिरिक्त भुजाएँ व एक सिर माँगता है। वरदान पाकर गाँव में आने पर लोग उसे राक्षस समझ कर मार देते हैं।

दूसरी कथा में चार मित्रों में से एक न ताम्बे से, न चान्दी से और न सोने से सन्तुष्ट होता है। रत्नप्राप्ति के चक्कर में उसकी अवर्णीय दुर्गति होती है। भर्तृहरि के अनुसार मनुष्य के पास साहित्य, संगीत, कला, विद्या, तप, दान, ज्ञान, सदाचार या धर्म में से कोई गुण होना चाहिए, अन्यथा वह विना सेंगों और पूँछ के घास न खाने वाला पशु है -

साहित्यसङ्गीतकलाविहिनः साक्षात्पशुः पुच्छविषाणहीनः।
तृणं न खादन्नपि जीवनमानस्तद्भागधेयं परमं पशूनाम्।।[20]
येषां न विद्या न तपो न दानं ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्म।
ते मर्त्यलोके भुविभारभूताः मनुष्यरुपेण मृगाश्चरन्ति।।[21]

आज कहीं-कहीं भाषा विवाद का स्वर सुनाई पढ़ता है। वैसे तो 'जनं बिभ्राणा विवाचसम' वेद का कथन भी भाषाविवाद को निराधार मानता है, किन्तु नीतिशास्त्र स्पष्ट करता है, कि किसी भी व्यक्ति की किसी भाषा में रुचि हो सकती है, लेकिन उसे अन्य भाषाओं को सीखने के लिए भी तत्पर रहना चाहिए। चाणक्य का कथन है –

गीर्वाणवाणीषु विशिष्टबुद्धिस्तथापि भाषान्तरलोलुपोऽहम्।[22]

संस्कृत में मेरी विशेष रुचि तो है किन्तु मै दूसरी भाषाएँ जानने का भी इच्छुक हूँ। भर्तृहरि सत्पुरुष बनने की विधि बताते हैं -

तृष्णां छिन्धि भज क्षमां जहि मदं पापे रतिं मा वृथाः
सत्यं ब्रूह्यनुयाहि साधुपदवीं सेवस्व विद्वज्जनम्।
मान्यान्मानय विद्विषोऽप्यनुनय प्राख्यापय प्रश्रयम्
कीर्तिं पालय दुःखिते कुरुं दयामेतत्सतां लक्षणम्।।[23]

स्पष्ट है, कि नीतिग्रन्थों में ऋषियों-मुनियों व मनीषियों का चिन्तन संगृहीत है। विभिन्न नीतिशास्त्रीय आचार्यों द्वारा निर्दिष्टमार्ग वर्तमान परीस्थितियों में बहुत प्रासंगिक है। उसका सम्बन्ध चाहे शासन व्यवस्था से हो, या नैतिक मूल्यों से हो अथवा अन्य किसी सामाजिक पक्ष से हो।

सन्दर्भ ग्रन्थ -

1. हितोपदेश
2. शुक्रनीति
3. अर्थशास्त्र
4. बुद्धचरितम्
5. पञ्चतन्त्र
6. वाल्मीकिरामायण
7. रघुवशंम्
8. महाभारत
9. चाणक्यनीति

पाद टिप्पणी:

[1] हितोपदेश, प्रस्ताविका-10

[2] शुक्रनीति, 4.3.56

[3] कौटिल्य अर्थशास्त्र, अधिकरण-15, अध्याय- 1

[4] शुक्रनीति, 4.3.54

[5] बुद्धचरितम्, 1.141

[6] पञ्चतन्त्र, कथा - 2

[7] शुक्रनीति, 2.409

[8] वाल्मीकिरामायण, १००.४७

[9] वाल्मीकिरामायण, १००.३२-३३

[10] वाल्मीकिरामायण, १००.५४

[11] रघुवशंम्, 1.18

[12] वाल्मीकिरामायण, युद्धकाण्ड, 11.30

[13] महाभारत, 36.11

[14] याज्ञवल्क्यस्मृति, व्यवहाराध्याय-१५६

[15] याज्ञवल्क्यस्मृति, व्यवहाराध्याय-156

[16] याज्ञवल्क्यस्मृति, व्यवहाराध्याय -167

[17] याज्ञवल्क्यस्मृति, व्यवहाराध्याय - 245

[18] मित्रलाभ, 435

[19] अपरीक्षित - 38

[20] नीतिशतक, 13

[21] नीतिशतक, 14

[22] चाणक्यनीति, 2.18

[23] नीतिशतक, 79